जल शतक (भाग-1)

तरुण भारत संघ

मूल्य @ ₹ 3/-

जल की रक्षा हम करें,
मचे नहीं हड़कम्प।
और खोलने ना पड़ें,
पैट्रोल वत पम्प।।

1

जल का संरक्षण करें,
और करें यह घोष।
व्यर्थ बहाई बूँद भी,
मानें अपना दोष।।

2

जल ईश्वर की देन है,
है जीवन का सार।
जाने ना दें एक भी,
बूँद कभी बेकार।।

3

जल पान का दे नहीं, तो स्वाद बेकार। मिट्टी में मिल जायगा, करो धरा सत्कार।। 16।

जल खर्चे पर बन्धुवर,
रखिए इतना ध्यान।
व्यर्थ बहाई बूँद तो,
अपना ही नुकसान।। 4

जल का संरक्षण करें,
सुनें खोलकर कान।
इसके बिन संसार में,
जीना ना आसान।। 5

जल संरक्षण को नहीं,
समझें कोई खेल।
खून पसीने से करें,
बूँद-बूँद का मेल।। 6

जल संरक्षण के बिना,
बिगड़े सारी बात।
बरखा गर्मी–शीत का,
बिगड़ेगा अनुपात।। 7

जल संरक्षण ना हुआ,
बिगड़ेंगे हालात।
बूँद–बूँद पर कलह से,
फिर बिगड़ेगी बात।। 8

जल संरक्षण के बिना,
सबका बंटाढार।
जल से ही धरती हरी,
जल से ही शृंगार।। 9

0141-2521221

जल जीवन की जान है,
बूँद-बूँद से आस।
अगर बचाएँगे नहीं,
होगा महाविनाश।।

10

जल को अमरत मानिए,
देता जीवन दान।
व्यर्थ उलीचें ना इसे,
दें पूरा सम्मान।।

11

जल जब बरसा तो उसे,
बहा दिया बेकार।
भंडारण करते अगर,
क्यों होते बेजार।।

12

जल संरक्षण ना हुआ,
होगी पीड़ा घोर।
होगा चारों ओर अब,
खून–खराबा शोर।।

13

जल का संरक्षण करें,
बुझे धरा की प्यास।
पुनर्भरण इसका करें,
होगा पुण्य प्रयास।।

14

जल की रक्षा हो सतत्,
खर्चे सोच विचार।
वरना मटके टंकिया,
बाँध सभी बेकार।।

15

जल हमेशा बचाइए,
ये करता कल्याण।
आने वाली पीढ़ियाँ,
मानेंगी अहसान।।

16

जल संचय हरदम करें,
हो अकूत भण्डार।
अनावृष्टि में भी रहे,
जीवन का आधार।।

17

जल स्तर गिरता गया,
जा पहुँचा पाताल।
अगर अभी चेते नहीं,
बदतर होंगे हाल।।

18

जल की बूँदों में बसे,
राम औ' घनश्याम।
बूँद-बूँद दर्शन करें,
मानें चारों धाम।।

19

जल के बाँधों में सदा,
उठती रहें तरंग।
ऊसर धरती में भरे,
हरियाली के रंग।।

20

जल चाहें यदि खूब तो,
अधिक लगाएँ पेड़।
पानी जाएगा ठहर,
देख खेत की मेंड़।।

0141-2521703

जल दोहन के वास्ते,
हर कोई तैयार।
इसे बचाने के लिए,
मिलकर करें विचार।। 22

जल को चाहे रोकना,
गड्ढे गहरे खोद।
ताल–तलैया–बावड़ी,
इनको ले लें गोद।। 23

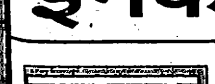

जल संरक्षण से भरें,
कुदरत में नवरंग।
साँसों को झंकृत करें,
बूँद–बूँद की चंग।। 24

जल सिंचन के क्षेत्र में,
करलें नए प्रयोग।
फव्वारे से सींचना,
इसका सद्उपयोग।।

25

जल संरक्षण के बिना,
होगा बंटाढ़ार।
जल से ही हम आप हैं,
जल है पालनहार।।

26

जल पीने को ना मिले,
हालत हो बदरूप।
प्यास सताए जेठ में,
तन झुलसाए धूप।।

27

जल अति दोहन कर रहा,
भू बंजर लाचार।
जल संरक्षण से करें,
धरती का शृंगार।।

28

जल को पाने के लिए,
जता रहे हैं रोष।
पाँव कुल्हाड़ी मारकर,
किसको देते दोष।।

29

जल का संरक्षण करें,
जल भर लें भरपूर।
सदैव स्वच्छ इसे रखें,
हों सारे दुख दूर।।

30

जल के हम सरवर बना,
खूब कमाएँ नाम।
जल उसमें भरता रहे,
आए सबके काम।। 31

जल पूरे संसार में,
है कुदरत की देन।
बिन इसके इस जगत् में,
हर प्राणी बेचैन।। 32

जल संरक्षण के लिए,
करते रहें उपाय।
काम रुके ना एक भी,
बूँद व्यर्थ ना जाय।। 33

09430 42430

के दानी हो गए,
कैसे अन्तर्ध्यान।
प्याऊ जैसे कर्म का,
नहीं किसी को ध्यान।।
34

बेचारा सोचता,
मानव मन क्यों क्रूर।
दोनों हाथ उलीचता,
होकर मद में चूर।।
35

बिन ढाणी–गाँव में,
उठते नित्य विवाद।
गाँव उजड़ते जा रहे,
शहर हुए बर्बाद।।
36

जल की बर्बादी हमें,
ले जाए किस मोड़।
अगर बाज आए नहीं,
देगा किस्मत फोड़ ।।

37

जल संरक्षण से रहे,
देश सदा आबाद।
सबसे हिलमिल बोलिए,
जल की जिंदाबाद ।।

38

जल संरक्षण के बिना,
जगती में जंजाल।
सुलझ न पाएँगे कभी,
उलझे हुए सवाल ।।

39

जल पीने को है नहीं,
झगड़े होंय अनेक।
इसका यही उपाय है,
हो सतर्क हर एक।। 40

जल का संरक्षण करें,
जब आए बरसात।
करें इकट्ठा यत्न से,
इसको हाथों हाथ।। 41

जल संरक्षण ना हुआ,
बिगड़ेंगे हालात।
फिर प्रेम शान्ति की यहाँ,
नहीं रहेगी बात।। 42

जल दूषित नित हो रहा, मिल हैं जिम्मेदार। कीच और अपशिष्ट से, करती बटाढार।। 97

जल का संरक्षण करें,
नहीं बहाएँ व्यर्थ।
बेदर्दी से खर्चना,
खुद के साथ अनर्थ ।।

43

जल संरक्षण ना किया,
बिगड़ेगी तस्वीर।
आदत होगी तामसी,
फूटेगी तकदीर ।।

44

जल के महाविनाश से,
हरे हो रहे घाव।
सूख रही झीलें–नदी,
डूब रही है नाव ।।

navaldaga@yahoo.com

जल का संरक्षण करें,
यही पुण्य का सार।
बूँद-बूँद संग्रह करें,
भर जाए भंडार।।

46

जल की बूँदों ने रचा,
जगती में इतिहास।
धरा गवाही दे रही,
दुहराता आकाश।।

47

जल को पाने के लिए,
कल जाएँगे दूर।
इसका रक्षण ना किया,
सपने होंगे चूर।।

48

जल का संकट है विकट,
समझें ना कमजोर।
बहाई बूँद व्यर्थ में,
फिर टूटेगी डोर।।

49

जल संरक्षण के बिना,
क्या होगी तस्वीर।
मर जाएँगे प्यास से,
राजा–रंक–फकीर।।

50

जल का संरक्षण करें,
फिर देखें परिणाम।
हो जाएँगे सहज सब,
दिनचर्या के काम।।

51

जल जमीन जंगल करें,
धरती का शृंगार।
करें दुर्दशा तीन की,
उनको है धिक्कार।। 52

जल संरक्षण ना हुआ,
मनवा रहे उदास।
रोटी जग को ना मिले,
नहीं बुझेगी प्यास।। 53

जल के बिन ये पेड़ सब,
हो जाएँगे ठूँठ।
इसको किंचित भी नहीं,
समझें कोई झूँठ।। 54

जल के रक्षण के बिना,
होंगे बेबस हाल।
इसको पाने के लिए,
होंगे खड़े बवाल।।

55

जल से खिलते बाग हैं,
लहराते हैं खेत।
फव्वारे से सींचना,
उन्नति का संकेत।।

56

जल का संरक्षण करें,
नहीं बहाएँ नीर।
इसके बिन सहनी पड़े,
पोर-पोर में पीर।।

57

जल का करना चाहिए,
बूँद–बूँद उपयोग।
वरना होगा जगत् में,
दुखदायी संयोग।।

58

जल संरक्षण के बिना,
सूखें सारे खेत।
हरियाली दिखती नहीं,
दिखे रेत ही रेत।।

59

जल संरक्षण मंत्र जब,
होगा सबको याद।
सच्चे अर्थों में तभी,
होंगे हम आजाद।।

60

जल से मनते हैं सभी,
तीज और त्यौहार।
जल से शोभित हो रहे,
धरती के शृंगार।।

61

जल बहते को रोकना,
हैं गुठली के दाम।
फसल खेत की सींचना,
मानें मीठे आम।।

62

जल को व्यर्थ गवाँ नहीं,
बूँद-बूँद लें काम।
जो चाहे तू भोगना,
सुखदायी परिणाम।।

63

जल है तो हम जी रहे,
हम हैं जल की देन।
इसको पाने के लिए,
जग सारा बेचैन।। 64

जल की रक्षा सब करें,
करें प्रदूषण दूर।
धरा स्वतः हो जात है,
सुखदायक भरपूर।। 65

जल संरक्षण से सदा,
होता रहता लाभ।
पालन करके देखिए,
कभी न व्यापे ताप।। 66

जल बगैर कैसे कहो, पलें भैंस अरु गाय। दूध-दही तो क्या हमें, नहीं मिलेगी चाय।।। 100

जल है तो मंगल सदा,
खूब मनाएँ फाग।
वरना फिर सर्वत्र है,
आग नाश दुर्भाग।।

67

जल के बिन खेती नहीं,
जंगल होंगे साफ।
पीढ़ी कोसेंगी हमें,
नहीं करेंगी माफ।।

68

जल संरक्षण के लिए,
प्रेरक अनगिन ढंग।
बैनर–झण्डे, रैलियाँ,
पर्चे–चर्चे, चंग।।

69

जल संरक्षण ना हुआ,
टूटेगा विश्वास।
दिखलाई देगा हमें,
चारों ओर विनाश।।

70

जल संरक्षण ना हुआ,
तो यह मानें साँच।
बूँद-बूँद के वास्ते,
होगा नंगा नाच।।

71

जल का संरक्षण करें,
गहरे हों तालाब।
रहे गाँव जल गाँव में,
उमड़ेंगे सैलाब।।

72

जल का संरक्षण करें,
ढ़ाणी–कस्बा–गाँव ।
फव्वारा उपयोग कर,
सही लगाएँ दाव ।। 73

जल के बिना आगत का,
कैसे हो सम्मान ।
दुविधा होगी सामने,
कैसे हो जलपान ।। 74

जल की बूँदें देवता,
मंदिर हैं तालाब ।
जल संरक्षण आरती,
जल सुख का सैलाब ।। 75

जल की बर्बादी बुरी,
कहते संत-सुजान।
व्यर्थ न जाए बूँद भी,
मन में लें यह ठान।।

76

जल की बूँदों को बचा,
समझें जल का अर्थ।
इसका संरक्षण करें,
नहीं बहाएँ व्यर्थ।।

77

जल जीवों का आसरा,
इससे कर लें प्यार।
एक बूँद को भी कभी,
नहीं करें बेकार।।

78

जल का संरक्षण करें,
हो सबका उत्कर्ष।
इस पूरे संसार में,
हों खुशियाँ अरु हर्ष।। 79

जल का संरक्षण करें,
थोड़ा-सा दें ध्यान।
व्यर्थ बहाने में सदा,
है भारी नुकसान।। 80

जल संचय के वास्ते,
बन जाएँ स्थान।
करें बाद में ही शुरू,
निज घर का निर्माण।। 81

जल ना चीखेगा कभी,
ना देगा आवाज।
सूखी झीलें ताल सब,
खोलेंगे यह राज।।

82

जल संरक्षण के लिए,
करें काम पर काम।
एक पंथ दो काज हों,
माया सागे राम।।

83

जल संरक्षण ना हुआ,
बिगड़ेगा सब खेल।
जीवन का आनन्द से,
नहीं रहेगा मेल।।

84

जल से प्राणी मात्र का,
है सीधा सम्बन्ध।
जल संरक्षण के लिए,
मन से करें प्रबन्ध।। 85

जल सदैव समभाव से,
हरता सबकी पीर।
राजा हो या रंक हो,
स्वामी दास फकीर।। 86

जल संरक्षण के लिए,
सबको करें प्रवीण।
इसका कम खर्चा करें,
तब जीवन रंगीन।। 87

जल संकट को रोकना,
सरल बहुत है खेल।
बहने ना दें व्यर्थ में,
थामे रहें नकेल।। 88

जल से ही इस भूमि का,
होता है शृंगार।
जंगल में मंगल करे,
आकर जल बौछार।। 89

जल जीवन पर्याय है,
इसका समझें मर्म।
यही मोक्ष का द्वार है,
यही सनातन धर्म।। 90

1707

मुद्रित सामग्री
पुस्त-प्रेष्य

प्रेषक,
तरुण भारत संघ
भीकमपुरा किशोरी,
पोस्ट-थानागाजी-301 022,
जिला-अलवर (राज.)

मूल्य @ ₹ 3/-

01-09-2012

Staple
32

लेखक, सम्पादक, प्रकाशक - नवल डागा, जयपुर-17
0141-2521221, 2521703, 09460142430
email : navaldaga@yahoo.com